

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Monday, 19 October 2026

नौकरी छूटी, लेकिन हौसला नहीं टूटा ! कविता वीर ने खड़ा किया 'कविप्रभा' मसालों का ब्रांड

Sanket Morankar

Published on 18 Oct 2026



20 साल की नौकरी के बाद संकट, लेकिन हौसले से बनाई नई राह
जीवन में कई बार परिस्थितियाँ इंसान को ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देती हैं, जहाँ आगे का रास्ता कठिन दिखाई देता है। लेकिन जो लोग अपने हुनर और आत्मविश्वास पर भरोसा रखते हैं, वे मुश्किलों को भी अवसर में बदल सकते हैं। कविता वीर की कहानी इसका प्रेरक उदाहरण है। बीस वर्षों तक शिक्षिका के रूप में काम करने के बाद कोरोना काल में अचानक नौकरी छूटने से उनके परिवार के सामने आर्थिक चुनौती खड़ी हो गई। तीन बच्चों के भविष्य की चिंता के बीच उन्होंने हार मानने के बजाय अपने कौशल को व्यवसाय का रूप देने का निर्णय लिया।

पुणे के लोहेगांव में अपने घर से शुरू किया गया उनका व्यवसाय आज 'कविप्रभा' मसालों के ब्रांड के रूप में आगे बढ़ रहा है। उनकी यह यात्रा मेहनत, आत्मविश्वास और विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति को दर्शाती है।

घर के स्वाद से शुरू हुआ 'कविप्रभा' का सफर

कविता वीर के हाथों से बने व्यंजनों और मसालों का स्वाद लोगों को पसंद आता था। इसी हुनर ने उनके नए व्यवसाय की नींव रखी। एक बार मुंबई से आई उनकी रिश्तेदार शामिल माने ने कविता द्वारा बनाई गई सब्जी का स्वाद चखा और उसकी विशेष रूप से सराहना की। जब उन्हें पता चला कि सब्जी में इस्तेमाल किया गया मसाला कविता ने खुद तैयार किया था, तो उन्होंने भी उस मसाले की मांग की।

इसके बाद मुंबई में शामिल माने के परिचितों से भी ऑर्डर मिलने लगे। लोगों की पसंद और बढ़ती मांग ने कविता को अपने घरेलू हुनर को व्यवसाय में बदलने की प्रेरणा दी। इसी तरह 'कविप्रभा' मसालों की शुरुआत हुई।

एक मसाले से 11 प्रकार के उत्पादों तक विस्तार

शुरुआत में कविता वीर सोलापुरी काला मसाला तैयार करती थीं। ग्राहकों की मांग बढ़ने के साथ उन्होंने अपने उत्पादों की विविधता भी बढ़ाई। आज वे काला मसाला, प्याज-लहसुन मसाला, बिरयानी मसाला, पावभाजी मसाला और चाय मसाला सहित कुल 11 प्रकार के मसाले तैयार करती हैं।

उत्पादों की गुणवत्ता, स्वाद में निरंतरता, आकर्षक पैकेजिंग और ग्राहकों के विश्वास को उन्होंने अपने व्यवसाय की प्राथमिकता बनाया। शुरुआत में साधारण पाउच में बेचे जाने वाले मसालों की पैकेजिंग समय के साथ स्टैंडी पाउच और बॉक्स तक पहुंच गई। यह बदलाव उनके व्यवसाय को व्यवस्थित और बेहतर स्वरूप देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रहा।

घर की जगह और संसाधनों से तैयार की उत्पादन व्यवस्था

कविता ने व्यवसाय शुरू करने के लिए अलग से कारखाना बनाने के बजाय घर में उपलब्ध जगह का सही उपयोग किया। उन्होंने घर की छत पर शेड तैयार किया और एक कमरे को सामान के भंडारण के लिए इस्तेमाल किया। वर्तमान में उनके पास चार मशीनें हैं, जिनसे उत्पादन प्रक्रिया को अधिक सुविधाजनक बनाने में मदद मिलती है।

व्यवसाय को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने आवश्यक पंजीकरण और कानूनी प्रक्रियाओं पर भी ध्यान दिया। सीमित संसाधनों के बीच उपलब्ध सुविधाओं का उपयोग करके उत्पादन व्यवस्था खड़ी करना उनकी व्यावहारिक सोच और उद्यमशीलता को दर्शाता है।

बढ़ते ऑर्डर से मजबूत हुई ब्रांड की पहचान

‘कविप्रभा’ मसालों के विस्तार में कल्याण स्थित ‘करिअर लाइट हाउस’ संस्था की रेखा बाविस्कर का सहयोग भी महत्वपूर्ण रहा। उनके माध्यम से मुंबई में हर महीने लगभग 350 किलोग्राम मसालों के ऑर्डर मिलने लगे। इसके अतिरिक्त पुणे, मुंबई और महाबलेश्वर से भी ऑर्डर प्राप्त होने की जानकारी कविता ने दी है।

ग्राहकों की मांग, उत्पादों की गुणवत्ता और लगातार मेहनत के सहारे कविता अपने व्यवसाय को आगे बढ़ा रही हैं। उनकी कहानी बताती है कि व्यवसाय की शुरुआत के लिए हमेशा बड़े निवेश या अलग व्यावसायिक परिसर की आवश्यकता नहीं होती। सही कौशल, ग्राहकों का विश्वास और उपलब्ध संसाधनों का समझदारी से उपयोग भी आगे बढ़ने का रास्ता बना सकते हैं।

महिलाओं के लिए प्रेरणा बनीं कविता वीर

बीस वर्षों की नौकरी छूटने के बाद कविता वीर ने परिस्थितियों के सामने हार नहीं मानी। उन्होंने अपने हुनर को पहचाना, छोटे स्तर से शुरुआत की और धीरे-धीरे उसे एक ब्रांड का रूप दिया। उनका सफर उन महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है, जो पारिवारिक जिम्मेदारियों या आर्थिक कठिनाइयों के बीच अपने कौशल के आधार पर आत्मनिर्भर बनने का सपना देखती हैं।

कविता की यात्रा यह संदेश देती है कि किसी कठिन परिस्थिति में अवसर समाप्त नहीं हो जाते। सही दिशा में प्रयास, गुणवत्ता के प्रति प्रतिबद्धता और निरंतर मेहनत से नई शुरुआत की जा सकती है।

कविता वीर की ‘कविप्रभा’ मसालों की सफलता की कहानी हुनर, मेहनत और आत्मविश्वास की ताकत को सामने लाती है।

शिक्षिका के रूप में 20 वर्षों तक काम करने के बाद नौकरी छूटने की चुनौती को उन्होंने अपने लिए नई राह बनाने का अवसर बनाया। घर से शुरू हुआ उनका व्यवसाय आज 11 प्रकार के मसालों और विभिन्न शहरों से मिलने वाले ऑर्डर तक पहुंच चुका है। कविता वीर का सफर साबित करता है कि दृढ़ संकल्प और गुणवत्ता के प्रति ईमानदारी के साथ कठिन परिस्थितियों में भी उद्यमिता की नई शुरुआत की जा सकती है।